जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत

संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत मानव बुद्धि की प्रकृति एवं उसके विकास से सम्बंधित एक विशद सिद्धांत है .पियाजे का मानना था कि व्यक्ति के विकास में उसका बचपन एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है .पियाजे का सिद्धांत 'विकासी अवस्था सिद्धांत कहलाता है .यह सिद्धांत ज्ञान की प्रकृति के बारे में है और बतलाता है कि मानव कैसे ज्ञान क्रमशः इसका अर्जन करता है,कैसे इसे एक-एक कर जोड़ता है और कैसे इसका उपयोग करता है .

व्यक्ति वातावरण के तत्वों का प्रत्यक्षीकरण करता है .अर्थात पहचानता है,प्रतीकों की सहायता से उन्हें समझाने की कोशिश करता है तथा सम्बंधित वास्तु/व्यक्ति के सन्दर्भ में अमूर्त चिंतन करता है .उक्त सभी प्रक्रियाओं से मिलकर उसके भीतर एक ज्ञान भण्डार या संज्ञानात्मक संरचना उसके व्यवहार को निर्देशित करती .इस प्रकार हम कह सकते है कि कोई भी प्रकार के उद्दीपकों से प्रभावित होकर सीधे प्रतिक्रिया नहीं करता ,पहले वह उन उद्दीपकों को पहचानता है,ग्रहण करता है,उसकी व्याख्या करता है .इस प्रकार हम कह सकते है कि संज्ञानात्मक संरचना वातावरण में उपस्थित उद्दीपकों और व्यवहार के बीच मध्यस्थता का कार्य करता है .

जीन पियाजे ने व्यापक स्तर पर संज्ञानात्मक विकास का अध्ययन किया. पियाजे के अनुसार बालक द्वारा अर्जित ज्ञान के भण्डार का स्वरूप विकास की प्रत्येक अवस्था में बदलता है और परिमार्जित होता रहता है .पियाजे के संज्ञानात्मक सिद्धांत को विकासात्मक सिद्धांत भी कहा जाता है .चूँकि उनके अनुसार ,बालक के भीतर संज्ञान का विकास अनेक अवस्थाओं से होकर गुजरता है, इसलिए इसे अवस्था सिद्धांत भी कहा जाता है .